रात्रिक्लास 6.4.68 ओमशान्ति ''स्वर्ग की बादशाही याद है?

बच्चों की मिशन है पत्थर बुद्धि को पारस या कांटों को फूल बनाना। सो तो मिशन तुम्हारी चालू है। सभी एक/दो को कांटे से फूल बना रहे हैं। इन्हों को भी ऐसा बनाने वाला ज़रूर किंग ऑफ फ्लॉवर होगा। स्वर्ग की स्थापना वा फूलों की बगीचा बनाने वाला एक बाप ही है। तुम हो खुदाई ख़िदमतगार। तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने की ख़िदमत करते हो। और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। समझाना भी सहज है। कलयुग में है ही तमोप्रधान। अगर कलयुग की आयु बढ़ा देंगे तो और ही तमोप्रधान बनेंगे; परन्तु तुम जानते हो अभी हमको फूल बनाने वाला बाप आया है। कांटा बनाना रावण का काम है। बाप फूल बनाते हैं। बच्चों को समझाया जाता है शिवबाबा और स्वर्ग का वर्सा याद है? जिसको शिवबाबा याद है उनको ज़रूर स्वर्ग भी याद होगा। यह तो सहज बात है। यह अच्छी बनाई है शिवबाबा याद है? सिर्फ़ यह भी लिख दो स्वर्ग का वर्सा याद है? प्रभातफेरी निकालो तो दिखाओ हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारियां भारत पर यह (ल.ना.) राज्य स्थापन करते हैं। ब्राह्मण सो देवता बनने हैं। देवता सो क्षत्री, क्षत्री सो वैश्य यह बाजोली बता देनी है। बहुत सहज बातें हैं। किसको भी यह समझाना सहज है। हम ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। ब्राह्मणों को चोटी माथे से ऊपर है। चोटी देखने से ही समझेंगे यह ब्राह्मण है। यह तो बहुत सहज है हमने 84 का चक्र कैसे पूरा किया; इसलिए विरा(ट) रूप में भी विष्णु को दिखाते हैं। पत्थर बुद्धि कुछ भी जानते नहीं। बच्चों को कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है। और सभी है भक्ति। ज्ञान एक बाप ही समझाते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक बाप ही है। इस समय बाप तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। भक्तिमार्ग में फिर इसकी यादगार चलता है। तुम बच्चे जानते हो बाप ने हमको रास्ता बताया है कि तुम इस पढ़ाई से मेरे से यह वर्सा ले सकते हो। यह तो सहज पढ़ाई है। नर से नारायण बनने की पढ़ाई। वह कथा कहना रांग है। कथा में एमऑबजेक्ट है नहीं। पढ़ाई में एमऑबजेक्ट है। तुम बता सकते हो। ल.ना. बनने की पढ़ाई आगे सुनी थी? उन्हों को ऐसा कर्म सिखलाने वाला कौन? बाप ने आकर सिखलाया। गायन भी है कर्मों की गति गहन है। सो बहुत गुह्य है। बाप समझाते हैं रावण राज्य में है दुःख। इस पढ़ाई से तुम ऐसे जगह जाते हो वहां काम होता नहीं। बाप जीत पहनाते हैं। तुमको कौन पढ़ाते हैं? वही ज्ञान का सागर है। तुम पत्थर बुद्धि क्या प्रश्न पूछ सकते हैं? पत्थर बुद्धि कहो, बन्दर बुद्धि कहो। बाप आपे ही आकर सभी कुछ समझाते हैं। बाप कहते हैं तुम्हारे अविनाशी ज्ञान रत्नों की झोली भरता हूं। पूछने की बात ही नहीं। बेहद के बाप से सवाल क्या पूछेंगे? बाप जानते हैं मैं ज्ञान का सागर हूं। यहां तो ज्ञान कुछ है नहीं। सभी पत्थर ही पत्थर है। रावण को ही नहीं जानते। तुमको अकल मिलता है पूछने लिए। चिट्ठी में लिख दो। प्रश्न पूछो। या कोई को छेड़ो आखरीन रावण है कौन? कब से जन्म हुआ है? कब से जलाते हो? कहेंगे यह अनादि है। तुम अनेक प्रकार से प्रश्न पूछ सकते हो। वह भी समय आवेगा तुम पूछेंगे कोई रेसपॉण्ड न करेंगे। तुम्हारी आत्मा याद की यात्रा में तत्पर हो जावेगी। अभी अपने ही दिल से पूछो हम तमोप्रधान बने हैं। दिल कहती है। अभी कर्मातीत अवस्था कहां हुई है? होनी है। अभी तुम थोड़े हो; इसलिए इतना कोई सुनते नहीं हैं। और तुम्हारी बात ही दूसरी है। पहले बताओ बाप संगमयुग पर आते हैं। एक–2 बात समझे तब ही आगे बढ़ना चाहिए और बड़ा धैर्य से ,प्यार से समझाना होता है। तुम्हारा एक ही प्रश्न बस है। दिल से पूछो। तुमको बाप कहते हैं गॉड फादर कहते हो ना। परमपिता अक्षर भी अच्छा है। तो पूछो दो बाप है? लौकिक और पारलौकिक। पारलौकिक बाप से बेहद का वर्सा मिलेगा तब तो सतोप्रधान बनेंगे। सतोप्रधान बने हो कलयुग में। देवताएं थे। सो भी देवताएं इन बातों को नहीं जानते। बाप याद पड़े तो भी खुशी का पारा चढ़े। अपन को विश्व की बादशाही ही याद आती है। अभी फिर से स्थापन हो रही है। अभी बुद्धि का ताला नहीं खुलता है। शिवबाबा के मन्दिर में सामने चित्र लगाकर समझाओ। शिवबाबा से स्वर्ग की बादशाही मिलती है। बच्चों को गुडनाइट।